

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५२७८ (१५८)

ग्रंथ नाम

व्यवहार.

विषय

मराठी काव्य.

क्र. नं. १६

५१६।प१७८ मराठी

काठ

बाड-स - सार्वभौमिकतेचे चिन्ह

गिरधर - या बाडांत ही-

सर्वभूत संघ - याची मूर्ति आहे -



(1)  
 ॥ श्रीनृपराजधनुर्धरते ॥ आनंदात्म ॥  
 ॥ जपूर्णपुंसते ॥ बाणनिश्चयेणितं ॥  
 ॥ नमयधन्यतुसिते ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

॥ साजगिगमाजमनिचनित्रगुजहअके  
 ॥ वायी ॥ राजकायधरुमिअता ॥  
 ॥ भयलोकीकके इभावेरामा ॥  
 ॥ चीदास्त्रवे रासिजिकेवा ॥  
 ॥ वालिनसाधे ॥ कामहेशच्य  
 ॥ पचइवेयाप माइवाते ॥ राम  
 ॥ अंरुवोडिरु केसानवपहुवकोमळ  
 ॥ हाते ॥ नवसातुसीसावंशिवातेभव ॥  
 ॥ सारमलोच्यनयाते ॥ नुचलोपवीवरी ॥  
 ॥ लाअपुडेटाई ॥ १३ ॥ यामनासिमामे  
 ॥ माइयाशरकामुं कपाणीराज ॥ कामरुं



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ चिसैं ) दुस्ति नाहि कृतनिश्चय जाते भा ॥  
 ॥ जा ) स्वकळा तुझी गा जा वा जान कर्ना ॥  
 ॥ माते सिवदा जा ) स्वविामी ठेवि न तु मा ॥  
 ॥ चे पाई ॥ २ ॥ पाहाता पिराव्य व दोळा ॥  
 ॥ मनत नमप जाहाले माझे लाहाची यो ॥  
 ॥ गवि सावा मज जा झूळान जगि लाजे ॥  
 ॥ वभंले मनमो इ नरामी नभनी मनी देवा ॥  
 ॥ नरामि झणत अ ताये आई ॥ ३ ॥  
 ॥ वसन के ला काय वे भायि मा ॥  
 ॥ ग कळी काळा हाति गफ विल्या ॥  
 ॥ मा ला म्या वा चरण ग ॥ द्वारे दी न कर ॥  
 ॥ कर जो दिधा क वायु वर जाडि ॥ हित गो ॥  
 ॥ वृ सागी त्कु थो दि म्या ॥ २ ॥ ब्रह्मा हो उन ॥  
 ॥ या वे दे वा चिम ज पु इ पा त दे ॥ वरु क्वरु ॥  
 ॥ ल के ली दे वा चि हा दे म्य ॥ २ ॥ पुण्य प्रता ॥  
 ॥ पी मी अे सा हा ली व ल के ला सा वा व व ड्य ॥  
 ॥ ज न का चा पण मा ना वा के स्वा ॥  
 ॥ म्या ॥ १ ॥ १ ॥ य व क ध नु ष्य त का य म ॥



The circular watermark contains the following text in Marathi:
   
 "The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan"

मरुत्पकहो<sup>(3)</sup>नीशाय<sup>(4)</sup>॥ गोसाविर्नंदन  
॥ शंकरपूजिहाहो ॥ अ॥ ०॥ ६॥ श्लोक ॥

॥ पाहनडोकानवरिवराया अण्डणेशव  
॥ णरावराया ॥ विदेहबोले जिणीता  
॥ पणाते ॥ ॥ वरिलत अपणाते ॥ ३॥

॥ पंदभजे ॥

॥ भावडभूतमहोचतगायीकापतेपो ॥

॥ रूपचोळी ॥ गणेश ॥ वरधणमेलअ

॥ लाच्यापडावे ॥ प्रवलेविष्णुअनि

॥ वारि ॥ अथवा ॥ सुरहारी ॥ ६॥

॥ मेरुशतसमभूत ॥ तुनीकार्मुक

॥ नुचलोयाते ॥ शभोसिवशास्त्रिमोळी

॥ ईतुकेगुश्चित्यामाते ॥ २॥ गीरीध

॥ रघुपूजिहोसाहाकरिगीरज्यास

॥ हयेकाळी ॥ लंकातिअपमानुनीक

॥ वीजे ॥ दशवदनकहीकाळी ॥ ३॥

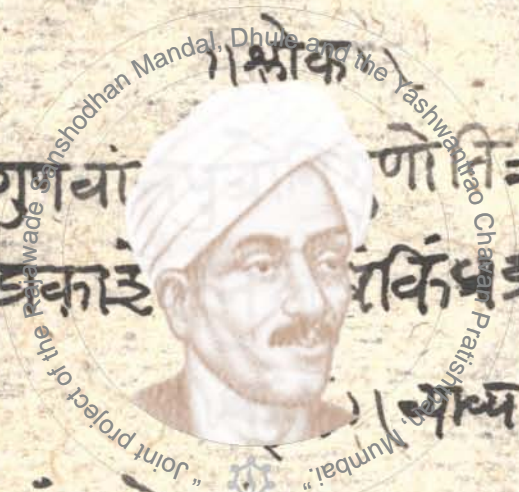


Joint project of  
Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the  
Vashwanath Chavan Pratishthan,  
Mumbai

॥ श्लोक ॥

॥ विब्रव्रसादातधारणिधरोहंमू ॥ विब्रव्रसादा  
 ॥ कमलावरोहंमू ॥ विब्रव्रसादातअज्यरा  
 ॥ मरोहंमू ॥ विब्रव्रसादाततवरामप्रधा ॥

॥ येकोपीगुवां णोनिशत्येरपि ॥  
 ॥ येकचदइकाइं शकिंध्रयो ज्यन ॥



॥ वाच्यादतंभनोदतं धारादतच्यनधियक  
 ॥ तेतेनरकायातेयावंच्यद्रोदिवाकराः ॥ ११ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ शतेशुज्यायतेशुरासहंस्वेषुच्यपडितावक्ता  
 ॥ दहसहंस्वेषुदाताभवतिमानवा ॥ १२ ॥  
 ॥ वामनभार्गवमनरहा दिवामनभार्गवम ॥ मण्डु  
 ॥ कर्मकरानहारीवामनभार्गवम

॥ खे जनाक्षिसंभं जुतरावाणि ॥ येकि  
 ॥ मैकीसिबोलतिपद्रपाणि ॥ ध्यावाइ  
 ॥ कैशेअश्रीयंजातीजादे ॥ जनकवाया  
 ॥ ध्याप्रमपपरिधवाअडे ॥ थोरदेवा  
 ॥ चीजाणसितावाइ ॥ बळेआहामेव  
 ॥ वाशेषशार्डे ॥ ३ ॥ कोठिकामाचीकां  
 ॥ तीजया लाजे ॥ ध्यायना ॥ १ ॥ जानकीसखा  
 ॥ से ॥ पुर्वपुण्या ॥ पेसिमा ॥ चिदा  
 ॥ नंदाचिमविर ॥ ॥ २ ॥ भूमिक  
 ॥ न्येतेपुर्णकाय ॥ वेळेवेळेअमंद  
 ॥ तनयध्यासि ॥ ॥



Joint Project of the  
 Sanyashree Mandal, Dhule and the  
 Yashwantrao Chavan Pratishthan,  
 Mumbai.

॥ पद ॥  
 ॥ देवुनिरावणअप्रमाना ॥ पदल्यभूपळ ॥  
 ॥ ध्यामानाहातकानालाविति ॥ १ ॥ अरेवा ॥  
 ॥ पानुध्यापनौहे ॥ काळचि ॥ अ ॥ ५ ॥ प्रावणा  
 ॥ चीदुर्देशा ॥ अश्रिक्वा ॥ लुविम्यामिश्या ॥  
 ॥ नधरुज्यानकीचिअशा ॥ ॥ प्राणवाचक

॥ परे ॥ अद्य ॥ २ ॥ रामरघु नंदे दाय  
॥ दाईक ॥ स लरुविव

॥ राचानायक ॥ धनुस ज्जी लतो पेक ॥

॥ गीरीधर गजे ये राशि ॥ ३ ॥

॥ साधु चराडि ॥ १ ॥

॥ साधु धराडि ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ साधु चराडि ॥ १ ॥

॥ वैष्णव यज्ञ या अत्रि च अद्या ॥ अंतर सं ॥

॥ लनिवाले ॥ २ ॥ अनंदास ज बोले ज्याच्या ॥

॥ सगे दे देव अहे ॥ ३ ॥

॥ देव नु जे थोर सिते धन का यवा ॥

॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥



Digitized by Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Nashik



११ पमानु ॥३॥ चिरमैदुखं केले गुदय ॥  
 १॥ विजयनु ॥३॥ कोटिमदनरूपमहचिबका  
 १॥ शमानु ॥ देवुनिश्रिरामसफळजनमभू ॥२॥  
 १॥ आववेद्दया सुवरिसदकियेतिवानु ॥  
 १॥ गीरिधरअभूतोचिवाई हृदयिअहनु ॥३॥

११ पद

१॥ ब्रोतत्रातापीशोयाचेचंपन्नदेशधिपयेति ॥  
 १॥ शाणवकुलिकेभूपुत्रवद्वेयेकगगाहोति ॥  
 १॥ जेनकसभसि देवविमानोपाहा ॥  
 १॥ ति १॥ पावकचे श्याचगेरीधरवा ॥  
 १॥ भूजाश्रुतिगाति श्रीरामहरिवा ॥



११ पदः ॥

१॥ रामरहिमनंहिरेदुज्या चरमो रामव  
 १॥ हिन्वेदुज्या वंमनहोके ज्यनवा  
 १॥ डाडेच्यारं मुरं वभाषा ज्यनवस  
 १॥ हीलतेरीमथा ज्यनतअहेयेवि  
 १॥ वंमनसाचा ॥३॥ सफेतकफ

॥ कपेडां निमात्रपडतीतिनादिनका  
मरोड्यकपडेमहिततेविमथा

॥ इपगतदेयेविवमुससामान  
मुसरुमानसान्या

॥ अंअंअंअंअंअंअंअंअंअंअंअं

॥ वसीसीवम... ॥

॥ वसवसहित ॥ इपनवहय ॥

॥ अड्योगीस ॥ अकहत ॥

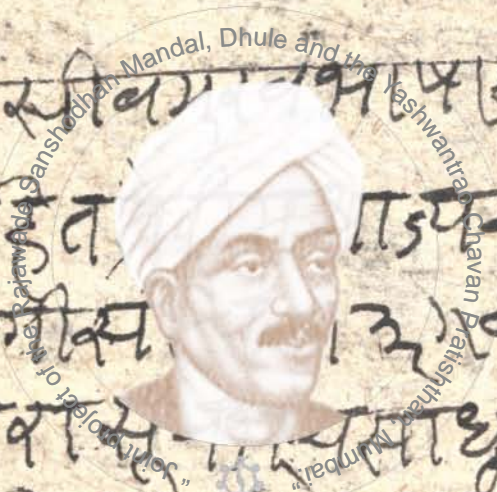
॥ कविवा... ॥

॥ अहनिवापायेपदकुकुहि ॥

॥ नीटाकरेसोगरककुडमाइया ॥

॥ ना ॥ वामः ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥



Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan

(१) श्री ॥

॥ ज्येष्ठामस्तकीवाजवि। ब्रह्मविणाहास्त्रिचे ॥

॥ मुखिवेदवाणिप्रभेनाडाभूच्यामुक्ति ॥

॥ गणोनि कितनाचे ॥ नवोनेसोवडे ॥

॥ याकितनो ॥ १॥ नाम्नामासितनमा ॥

॥ प्रसरठमुखमोठेदृष्टदाडाकरा ॥

॥ उपरमच्यपरुजिवाखेदुगजे ॥

॥ सानिरा ॥ १॥ ॥

॥ आप ॥ १॥ ॥

॥ भूड ॥ १॥ ॥

॥ ॥ १॥ ॥

॥ शुभनरवश्यत्रोदेखि ॥

॥ लेपंकापाणिवसेउव ॥

॥ वापोठतुजेविदारि ॥ ३॥ ॥

॥ पदशाख ॥



॥ श्रीभूवनच्या पुनिधोरुताहासात्री ॥  
 ॥ भूवनच्या पुनीव ज्यगभूड्यगाचा ॥  
 ॥ भासुरुडाकाकळकाचिभयथोष ॥  
 ॥ जाहाला अस्नासुनिसाडो ॥  
 ॥ निमोडो निमोडनीकयसाधारण ॥  
 ॥ नाहासात्रि ॥  
 ॥ जाहाला ॥  
 ॥ वामराम ॥  
 ॥ शनकेडे सागरा लिभथन करीतले ॥  
 ॥ तेव्हा विषहाळले ॥ तथाडाकातडा ॥  
 ॥ डाअग्नी तथा परसिडाळितगेडा ॥  
 ॥ तथासदासि वानेद्रिष्टि पापाहा ॥  
 ॥ ताचि प्रास्यनकेडे ॥ रामरामरस ॥



(11)

॥ पद २ ॥

॥ अंठीदबेहेस्वजनि सजावे लपो ॥

॥ चनां हा उगी उगसजावे तेथे भववे हा ॥

॥ रीच्यपदाते ते या पदाते हा रिते पदा ॥

॥ ते ॥ ३ ॥ पशु जसे चाविनि सेव स्याते ॥

॥ पुनसंपुनाते विति सेवयते ॥ स्त्री

॥ खेन हुवे बुधित न पिया हा अंला ॥

॥ ददे लये वये ॥ १ ॥ ॥ बस

॥ सय व्रतसु खेन न जाले करित से ॥

॥ तपण तयापे उजु लि अ लंप मळ

॥ लीन जगट लाः ॥ ३ ॥ यिद्रा दि देवामि

॥ कोन वळुं देया लि सखं करुनत

॥ या स मुद मथन असी लो

॥ २ ॥



॥ पाहोनि यत्त्वद्गणे प्रीतिवि कोणने  
॥ इतोसि चोरादेस्य कोथे वा वलासु

(12)

॥ टो वार प्र



Joint project of  
Santosh Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the  
Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

दोबारी ॥१॥

॥ वैसा सागर तार रधा गरिसे डुबे सया ॥  
 ॥ सात सेरव्या मिले पाणि भर णगे अत्रा ॥  
 ॥ मते डुबि सया ॥१॥

॥२॥

॥ साख बेचन आई नगर मे सा ॥१॥  
 ॥ चुंवा विचेवा रुक विचे इहि उजरि के ज ॥  
 ॥ हि नगर मे साख ॥१॥  
 ॥ कैव स्व साहि तरि नजर दिवा ॥  
 ॥ निक व ॥१॥ पापी जमुना ॥  
 ॥ के पाणि पावि निते रि नज ॥  
 ॥ राद निक ॥१॥ मे रि ज्या ज्यनुंस ॥  
 ॥ नयन मि कु ई दि नि या द करे रो मे ॥  
 ॥ हाम तु म मि रु के से ज बना उ जांग ॥  
 ॥ हि भ ला स ति वे ड मे री ॥१॥



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(14) नामकक का व्याख्यान रत्नकोक  
१७०८  
५१५५

॥ हंसनादमतं देवं देवांना विभयं भयं  
॥ यं भयं भविता वा देव देहं मद्नासहं ॥  
॥ यामा नाममतामाया ॥ माक्षरोक्ष ॥  
॥ क्षक्षरोक्षमा ॥ २ ॥ तारो नो गगनो रो  
॥ नामक्षगक्षक्षमा ॥ ३ ॥



॥ गेलामानसा ॥ ज्ञेयहारिविणे ॥  
॥ सावध होउ ॥ विना यशं कुर  
॥ गुरुवापमाय ॥ तारे वरसा धक जि  
॥ णे ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ पुता चे पुर्ण काम करितानि  
॥ जमुक्तिरामपडो नरिसर्वथा उणे ॥  
॥ कतुनिश्चयहाचिकरुनिनि  
॥ जोरगीरंगवस्तानि ॥ जणेयुकावि  
॥ ऊजाणेयण ॥ ३ ॥ रणपुर्ण





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com